## पहले खुद पर प्रयोग करे

**गांधीजी** रोज अपने आश्रम की हर एक चीज का बारीकी से मुआयना करते थे . ठंडी के दिन थे . वे आश्रम की **गोशाला** में पहुंचे . उन्होंने गायों को सहलाया और प्यार से बछड़ों को थपथपाया .

उनके प्रेम भरे स्पर्श का जानवरों ने भी गर्दन हिलाकर जवाब दिया . वे गोशाला से निकल रहे थे तभी उनकी नजर एक गरीब लडके पर गयी . उन्होंने उससे पूछा, " तुम रात को यहीं सोते हो ? "

उस लडके ने कहा, " जी बापू जी . मैं रात को यहीं सोता हूँ . " गांधीजी बोले, " बेटा आजकल ठण्ड बहुत अधिक है . क्या तुम्हे ठण्ड नहीं सताती ? "

उस लडके ने कहा, " बापू जी, ठण्ड तो बहुत लगती है . "

" अच्छा तो तुम ठण्ड से बचने के लिए क्या ओढ़ते हो ? " गांधीजी ने उस लडके से पूछा . उस लडके ने एक फटी चादर दिखाते हुए कहा, " मेरे पास ओढ़ने के लिए बस यही है . "

उस लडके की बात सुनकर गांधीजी हैरान रह गए . उसके बाद वे अपनी कुटिया  में लौट आये और **कस्तूरबा जी** से दो पुरानी साड़ियाँ और कुछ अखबार और रुई मंगवाई .

उसके बाद उन्होंने साड़ियों की खोली बनाकर उसमें अखबार और रुई भरकर एक रजाई तैयार की . उसके बाद उन्होंने उस लडके को बुलाया और उसे प्यार से रजाई देते हुए बोले, " अब इसे ओढ़ना और कल बताना ठंडी लगी की नहीं "

अगले दिन जब बापूजी गोशाला की तरफ गए तो वह लड़का उन्हें वही नजर आया . उन्होंने उससे पूछा, " बेटा कल ठंडी लगी . " उसने खुश होते हुए कहा, " नहीं बापूजी, कल ठंडी नहीं लगी . कल तो बहुत प्यारी नींद आई . "

गांधीजी बहुत खुश हुए और बोले, " बेटा , अब मैं भी ऐसी ही रजाई ओढूंगा . "

## लकड़हारा

एक गांव में एक **लकड़हारा** रहता था। वह रोज जंगल जाता और जंगल से सूखी लकड़ियां काटकर उन्हें बाजार में बेच देता। यही उस किसान की जीविका का साधन था।

एक दिन की बात है वह रोज की तरह जंगल गया। गर्मी के दिन थे। तेज धूप थी। वह लकड़ियां काटकर बहुत थक चुका था और उसे भूख भी लगी थी।

दोपहर का समय था उसने खाना खाने के लिए एक छायादार जगह ढूंढने लगा और उसके बाद एक सेब के पेड़ के नीचे बैठा और भोजन करने लगा।

उसे भूख बहुत तेज लगी थी। भोजन ख़त्म हो गया और उसकी भूख ख़त्म नहीं हुई। अभी वह इस बारे में सोच ही रहा था कि अचानक से उसके बगल में एक सेब गिरा।

उसने जब ऊपर देखा तो वहां एक परी बैठी थी। वह **परी** को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। लकड़हारे को देखकर परी नीचे आई और बोली आप इतने उदास क्यों है ?

तब लकड़हारे ने कहा मैं एक गरीब आदमी हूं। किसी तरह से लकड़ियां काटकर अपनी जिंदगी चला रहा हूं। तब परी ने कहा मैं आपको एक फावड़ा देती हूं और उस फावड़े से आप इस पेड़ के चारों तरफ खुदाई करिए।

आपको यहां पर एक खजाना मिलेगा और यह कहकर परी ने एक मंत्र पढ़ा और वहां एक फावड़ा आ गया और उसके बाद परी चली गयी।लकड़हारे ने उस पेड़ के चारों तरफ खुदाई शुरू की.

काफी समय तक खोदने के बाद उसे वहां एक बॉक्स मिला। जब उसने बॉक्स को खोला तो उसने ढेर सारा खजाना था। वह आश्चर्यचकित रह गया।

उसने सोचा परी ने मुझे यह खजाना लेने के लिए कहा है लेकिन यह अगर किसी और का हुआ तो ? नहीं - नहीं इस जंगल और यहां की हर उस चीज पर राजा का अधिकार है जिसका कोई मालिक ना हो।

अतः मुझे इस खजाने को राजा के पास ले जाना चाहिए। वह खजाना भरा बॉक्स लेकर राजा के पास गया और पूरी बात कह सुनाई। राजा ने उसकी बात बड़े ही गौर से सुनी और उसके बाद बोला, " तुम बहुत ईमानदार नागरिक हो। तुम चाहते तो यह खजाना चुपचाप रख सकते थे लेकिन तुम इसे लेकर मेरे पास आये। मैं तुम्हें इस खजाने को को इनाम स्वरूप प्रदान करता हूं और इसके साथ ही मैं तुम्हे अपने राज्य का कोषाध्यक्ष नियुक्त करता हूं। " आदमी बहुत खुश हुआ अपने घर चला गया और उसके बाद उसका जीवन बहुत ही सुखमय तरीके से कटने लगा।